Q. समाजीकरण से आप क्या समझते हैं?
What do you mean by socialization?

Ans. समाजीकरण की प्रक्रिया व्यक्ति और समाज दोनों के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि मनुष्य इसलिए सामाजिक प्राणी है कि समाजीकरण की प्रक्रिया के द्वारा समाज उसे जैविकीय प्राणी से सामाजिक प्राणी बनाता है और समाज का अस्तित्व इसलिए है कि समाजीकरण के द्वारा व्यक्ति स्वयं सम्बन्धों का निर्माण करके समाज को व्यवस्थित बनाते हैं। इसी कारण समाजशास्त्रियों तथा मनोवैज्ञानिकों ने समाजीकरण की प्रक्रिया को व्यक्ति और समाज के बीच की कड़ी स्वीकार किया है।

परिभाषा (Definition) समाजीकरण को परिभाषित करने का प्रयास विभिन्न विचारकों ने किया है —

जॉनसन के अनुसार "समाजीकरण एक प्रकार का सीखना है जो सीखने वाले को सामाजिक कार्य करने के योग्य बनाता है।"

किम्बल यंग के अनुसार "समाजीकरण व्यक्ति को सामाजिक और सांस्कृतिक दुनिया से परिचित कराने उसे समाज तथा उसके विभिन्न समूहों में एक सहयोगी सदस्य बनाने तथा उसे समाज के आदर्श, नियमों तथा मूल्यों को स्वीकार करने को प्रेरित करने वाली प्रक्रिया है।"

ए०. डब्लू ग्रीन के अनुसार "समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बच्चा सांस्कृतिक विशेषताओं तथा व्यक्तित्व को प्राप्त कर लेता है।"

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति शारीरिक प्राणी से सामाजिक प्राणी में परिवर्तित होता है और समाज में रहने के योग्य बनता है। इस प्रक्रिया के द्वारा वह समाज की संस्कृति और सांस्कृतिक मूल्यों को अपनाता है। फलस्वरूप संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती रहती है। यह प्रक्रिया व्यक्ति के जन्म से आरम्भ होती है और उसकी मृत्यु तक होती रहती है। इसी कारण Broom तथा Selznick ने इसे Lifelong Process कहा है।

कुछ मानव प्राणी मानव समाज से बाहर पाये गये। गेसेल के wolf Children and Human Child तथा डेविस के लेखों से ऐसे प्राणियों का वर्णन मिलता है। भारतवर्ष में 1920 में दो मानव बच्चे भेड़ियों की माँद में पाये गये। एक बालिका 8 वर्ष की थी। पहला बच्चा 6 वर्ष तक जीवित रहा। उसका नाम कमला रखा गया। इस लड़की को

मानव की तरह व्यवहार करना बिलकुल नहीं आता था। वह पशुओं की भाँति चार पैरों से चलती थी, भेड़ियों की तरह गुर्राती थी, मनुष्य की परछाई से भी डरती थी। इस प्रकार समाजीकरण के अभाव में उसमें शरीर के अतिरिक्त मनुष्य के चिन्ह लगभग नगण्य थे। धीरे-धीरे उसको बोलना सिखाया गया। इस प्रकार सालों के समाजीकरण के प्रभाव से वह कुछ मानव व्यवहार सीख सकी।

जिस प्रकार से पाठशाला में पाठशालाकरण होता है ठीक उसी प्रकार समाज में मनुष्य का समाजीकरण होता है। समाजीकरण निरन्तर प्रक्रिया है जो केवल मृत्यु के पश्चात ही समाप्त होती है। मानव सामाजिक परिवेश में अनेकानेक व्यक्तियों से अन्तःक्रियाएं करने लगता है। इस प्रकार उसमें उसकी आदतों, मूल्यों, अभिवृत्तियों के साथ-साथ रहन सहन का तरीका, विश्वास, सामाजिक नियमों के पालन आदि का विकास हो जाता है। यह सब व्यक्ति सीखता है और जिस प्रक्रिया द्वारा यह सब सीखता है उसको समाजीकरण कहते हैं। उसके द्वारा जीवन के ढंग को सीखा और सिखाया जाता है।

Vijand Kumar Mishra
Asst Professor (Guest Faculty)
Dept of Sociology
Date 13-07-2021